वीतराग शासन जयवंत हो

विधान

रचयिता :

प. पू. आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज

कृति : साप्ताहिक विधान (लघु)

कृतिकार : परम पूज्य साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण : प्रथम 2024, प्रतियाँ : 1000

संकलन : मुनि श्री विशालसागरजी महाराज, मुनि श्री विश्वसागर जी महाराज, मुनि श्री विभोर सागरजी महाराज

सहयोगी : आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी

संपादन : ब्र. ज्योति दीदी – मो.: 9829076085
ब्र. आस्था दीदी – मो.: 9660996425
ब्र. सपना दीदी – मो.: 9829127533
ब्र. आरती दीदी – मो.: 8700876822
ब्र. प्रदीप भैया – मो.: 7568840873

प्राप्ति स्थल : 1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017
2. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी, मो.: 09416888879
3. नीरज जैन, लखनऊ, मो.: 9451251308
4. हरीश जैन, दिल्ली, मो.:

पुण्यार्जक :

भक्ति की महिमा

नवदेव पूज्यं लोके, पुण्य वर्धन हेतवे।
तेषा: आराधना: कुर्यात्, विशद शैव प्रदायक:॥

नवदेव लोक में पूज्य माने गये हैं जो पुण्य वृद्धि में हेतु हैं उनकी आराधना विशद मोक्ष प्रदायी है जो अवश्य करने योग्य है। अनादि निधन जैन धर्म में भक्ति को मुक्ति का साधन माना गया है। मुक्ति के दो मार्ग कहे गये हैं – 1 तप मार्ग, 2 भक्ति मार्ग।

वर्तमान के दौर में व्यक्ति स्वयं को दुखी और असहाय मान रहा है इस स्थिति में लोगों के द्वारा प्रतिदिनि के आराध्य जिन निश्चित किए हैं उनके अनुसार लघु विधान करना चाहते हैं उनकी भावनाओं को देखते हुए लघु विधानों की रचना की गई जो लोगों को पसन्द आएगी एवं पूजा भक्ति करके पुण्यार्जन करते हुए विशद जीवन को मंगलमय बना सके इस भावना से प्रस्तुत है यह साप्ताहिक विधान संग्रह जो गुरुवर के आशीर्वाद का प्रसाद है। संघस्थ ब्र. आरती दीदी ने पुस्तक के कंपोजिंग में सहयोग प्रदान किया उनको हमारा मंगलमय आशीर्वाद।

ॐ नम:
आचार्य विशद सागर
कौशाम्बी, 4-5-2021

अंतस् की भावना

गुरुवर की कृपा जग में सबसे निराली।
होली यही, दशहरा यही है दिवाली।।

भारत एक ऐसा देश है जहाँ हमेशा एक से बढ़कर एक तपोनिष्ठ साधु–संत, ऋषि– महर्षि एवं महापुरुष हुए हैं जिन्होंने भारतीय सांस्कृतिक एवं आचरणात्मक नैतिक मूल्यों की अजस्र धारा निरन्तर प्रवाहित की है। जिनमें अवगाहन कर अनेकों जीवों ने अपने जीवन को सफल बनाया है। ऐसे ही संत–मुनियों में अद्वितीय है परम पूज्य आचार्य श्री विशद सागर की पावन वाणी **सत्यं-शिवं-सुन्दरं** की विराट अभिव्यक्ति तथा मुक्तिद्वार खोलने में सर्वथा सक्षम है।

समस्त लोककल्याण की भावना से युक्त कविहृदय, **क्षमामूर्ति, वात्सल्यरत्नाकर, परमज्ञानी, महायोगी** जो देश की माटी की गरिमा बढ़ा रहे हैं ऐसे अभिवंदनीय, विश्व–वंदनीय गुरुवर के श्री चरणों में कोटिश: नमोस्तु–3

आचार्य श्री के चरणों में अंतिम मनोभावना–

तेरी छत्रछाया गुरुवर मेरे सिर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि तेरे दर पर हो।।

– ब्र. आरती दीदी

(संघस्थ–आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज)

विनय पाठ (लघु)

(दोहा)

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देवजी, कर्म नशाए आठ।।1।।
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनन्त चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान।।2।।
पीड़ा हारी लोक में, भव-दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के, शिवपद के दातार।।3।।
धर्मामृत दायक प्रभो !, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र।।4।।
भविजन को भवसिन्धु में, एक आप आधार।
कर्म बन्ध का जीव के, करने वाले क्षार।।5।।
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हों नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश।।6।।
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग।।7।।
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो !, आया तुमरे द्वार।।8।।

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत।।9।।
मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।।10।।

।। इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनमः। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं, धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधूभ्यो अर्घ्य निर्व. स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।5।।

"पूजा प्रतिज्ञा पाठ"

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।
तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।
भाव शुद्धि पाने हे स्वामी !, करता हूँ प्रभु का गुणगान।।1।।
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!
हे अर्हन्त! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।
होकर के एकाग्रचित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन।।2।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपामि।

"स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश।।
विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय।।

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति मंगल विधानं
पुष्पांजलिं क्षिपामि।

"परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निस्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व पर कल्याण।।1।।
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौं भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान।।
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान।।2।।
भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश।।
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज।।3।।

।। इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं ।।

आप्तेन विशदो धर्मः, परोपकृतये शताम्।
गम्भीर ध्वनिनाऽ भाषिः, वर्ण मुक्तेन् निस्पृहम्।।
अर्थ - आप्त ने अपनी गम्भीर वाणी से निर्मल और जीवों के कल्याण हेतु धर्म का स्वरूप भव्य जीवों के कल्याण हेतु कहा है।

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन

स्थापना

देव-शास्त्र-गुरु पद नमन, विद्यमान तीर्थेश।
सिद्ध प्रभु निर्वाण भू, पूज रहे अवशेष।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु, विद्यमान विंशति जिन:, अनन्तानन्त सिद्ध, निर्वाण क्षेत्र समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल-छन्द:)

जल के यह कलश भराए, त्रय रोग नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नम: जलं निर्व. स्वाहा।

शुभ गंध बनाकर लाए, भवताप नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नम: चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नम: अक्षतं निर्व. स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नम: पुष्पं निर्व. स्वाहा।

पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ।।5 ।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत का ये दीप जलाएँ, अज्ञान से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ।।6 ।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ।।7 ।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः धूपं निर्व. स्वाहा।

ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ।।8 ।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः फलं निर्व. स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ।।9 ।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- शांती धारा कर मिले, मन में शांति अपार।
अतः भाव से आज हम, देते शांती धार।।

।। शांतये शांतिधारा ।।

दोहा- पुष्पांजलि करते यहाँ,लिए पुष्प यह हाथ।
देव शास्त्र गुरु पद युगल, झुका रहे हम माथ।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

अर्घ्यावली

(दोहा)

दोष अठारह से रहित, प्रभु छियालिस गुणवान।
देव श्री अर्हन्त का, करते हम गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं षट् चत्त्वारिंशत् गुण विभूषित अष्टादश दोष रहित श्री अरिहंत सिद्ध जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिन के सर्वांग से, खिरे दिव्य ध्वनि श्रेष्ठ।
द्वादशांग मय पूजते, लेकर अर्घ्य यथेष्ठ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीजिन मुखोद्भूत सरस्वती देव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विषयाशा त्यागी रहे, ज्ञान ध्यान तपवान।
संगारम्भ विहीन पद, करें विशद गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीस विदेहों में रहें, विहरमान तीर्थेश।
भाव सहित हम पूजते, लेकर अर्घ्य विशेष।।4।।

ॐ ह्रीं श्री विहरमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म को नाशकर, के होते हैं सिद्ध।
पूज रहे हम भाव से, जो हैं जगत् प्रसिद्ध।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तानन्त सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में जो रहे, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
जिनकी अर्चा भाव से, करते यहाँ महान।।6।।

ॐ ह्रीं सर्व निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - देव-शास्त्र-गुरु के चरण, वन्दन करें त्रिकाल।
'विशद' भाव से आज हम, गाते हैं जयमाल।।

(तामरस-छन्द)

जय-जय-जय अरहंत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते।
कर्म घातिया नाश नमस्ते, केवलज्ञान प्रकाश नमस्ते।।1।।
जगती पति जगदीश नमस्ते, सिद्ध शिला के ईश नमस्ते।
वीतराग जिनदेव नमस्ते, चरणों विशद सदैव नमस्ते।।2।।
विद्यमान तीर्थेश नमस्ते, श्री जिनेन्द्र अवशेष नमस्ते।
जिनवाणी ॐकार नमस्ते, जैनागम शुभकार नमस्ते।।3।।
वीतराग जिन संत नमस्ते, सर्वसाधु निर्ग्रन्थ नमस्ते।
अकृत्रिम जिनबिम्ब नमस्ते, कृत्रिम जिन प्रतिबिम्ब नमस्ते।।4।।
दर्श ज्ञान चारित्र नमस्ते, धर्म क्षमादि पवित्र नमस्ते।
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण नमस्ते, पावन पंचकल्याण नमस्ते।।5।।
अतिशय क्षेत्र विशाल नमस्ते, जिन तीर्थेश त्रिकाल नमस्ते।
शाश्वत तीरथराज नमस्ते, 'विशद' पूजते आज नमस्ते।।6।।

दोहा – अर्हतादि नव देवता, जिनवाणी जिन संत।
पूज रहे हम भाव से, पाने भव का अंत।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – देव-शास्त्र-गुरु पूजते, भाव सहित जो लोग।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, पावें शिव का योग।।

।। इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)।।

मूलनायक सहित समुच्चय पूजा

स्थापना (दोहा)

देव शास्त्र गुरु देव नव,विद्यमान जिन सिद्ध।
कृत्रिमा-कृत्रिम बिम्ब जिन, भू निर्वाण प्रसिद्ध।।
सहस्त्रनाम दशधर्म शुभ, रत्नत्रय णमोकार।
सोलह कारण का हृदय, आह्वानन् शत् बार।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व देव शास्त्र गुरु, नवदेवता, तीस चौबीसी विद्यमान विंशति जिन, पंचमेरु, नन्दीश्वर, त्रिलोक सम्बन्धी, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सहस्त्रनाम, सोलह कारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, णमोकार, निर्वाण क्षेत्रादि समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी-छन्द:)

यह निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रुज विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय जलं निर्व.स्वाहा।

सुरभित यह गंध चढ़ाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय चंदनं निर्व.स्वाहा।

अक्षत के पुंज चढ़ाएँ, शाश्वत अक्षय पद पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

पुष्पित हम पुष्प चढ़ाएँ, कामादिक दोष नशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय पुष्पं निर्व.स्वाहा।

चरु यह रसदार चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

रत्नोंमय दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय दीपं निर्व.स्वाहा।

सुरभित यह धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय धूपं निर्व.स्वाहा।

फल ताजे शिव फलदायी, हम चढ़ा रहे हैं भाई।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय फलं निर्व.स्वाहा।

यह पावन अर्घ्य चढ़ाएँ, अनुपम अनर्घ्य पद पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा – शांती पाने के लिए, देते शांती धार।
हमको भी निज सम करो, कर दो यह उपकार।।

(शांतये शांतिधारा)

दोहा – पुष्पांजलि करते यहाँ, लेकर पावन फूल।
विशद भावना है यही, कर्म होंय निर्मूल।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा – जैन धर्म जयवंत है, तीनों लोक त्रिकाल।
गाते जैनाराध्य की, भाव सहित जयमाल।।

(ज्ञानोदय छन्द)

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैन धर्म जिन चैत्य जिनालय, जैनागम का है अर्चन।।1।।
भरतैरावत ढाई द्वीप में, तीन काल के जिन तीर्थेश।
पंच विदेहों के तीर्थंकर, पूज रहे हम यहाँ विशेष।।2।।
स्वर्ग लोक में और ज्योतिषी, देवों के जो रहे विमान।
भावन व्यन्तर के गेहों में, रहे जिनालय महति महान।।3।।
मध्य लोक में मेरु कुलाचल, गिरि विजयार्ध है इष्वाकार।
रजताचल मानुषोत्तर गिरि तरु, नन्दीश्वर है मंगलकार।।4।।
रुचक सुकुण्डल गिरि पे जिनगृह, सिद्ध क्षेत्र जो हैं निर्वाण।
सहस्त्रकूट शुभ समवशरण जिन, मानस्तंभ हैं पूज्य महान।।5।।
उत्तम क्षमा मार्दव आदिक, बतलाए दश धर्म विशेष।
रत्नत्रय युत धर्म ऋद्धियाँ, सहसनाम पावें तीर्थेश।।6।।

दोहा - सोलह कारण भावना, और अठाई पर्व।
पंच कल्याणक आदि हम, पूज रहें हैं सर्व।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक 1008 श्री ....सहित वर्तमान भूत भविष्यत सम्बन्धी पंच भरत, पंच ऐरावत, पंच विदेह क्षेत्रावस्थित सर्व तीर्थंकर, नवदेवता, मध्य ऊर्ध्व एवं अधोलोक, नन्दीश्वर, पंचमेरु सम्बन्धित कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, गर्भ जन्म तप केवलज्ञान निर्वाण भूमि, तीर्थ क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, दशलक्षण, सोलहकारण, रत्नत्रयादि धर्म, ढाई द्वीप स्थित तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिवरेभ्यो सम्पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा - जिनाराध्य को पूजकर, पाना शिव सोपान।
यही भावना है विशद, पाएँ पद निर्वाण।।

(इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

देव-शास्त्र-गुरु की आरती

(तर्ज - ॐ जय देव.....)

ॐ जय देव शास्त्र गुरुवर, स्वामी देव शास्त्र गुरुवर।
आरती करें तुम्हारी-2, दीपक शुभ लेकर।।
ॐ जय देव शास्त्र।।टेक।।

प्रथम आरती देवश्री जो, अर्हत् कहलाए-स्वामी...।
सिद्ध श्री लोकाग्र निवासी-2, परम शुद्ध गाए।।
ॐ जय..... ।।1।।

जिनवाणी कल्याणी है जो, जग माता गाई-स्वामी...।
पढ़ें सुने ध्याने वाले की-2, बुद्धि बढ़े भाई।।
ॐ जय..... ।।2।।

आचार्योपाध्याय साधु दिगम्बर, गुरुवर कहलाए-स्वामी...।
मोक्ष मार्ग के राही अनुपम, गुरुवर ये गाए।।
ॐ जय..... ।।3।।

देव शास्त्र गुरु की जो प्राणी, आरति यह गाए-स्वामी...।
'विशद' सौख्य पाके इस जग के-2, शिव पथ अपनाए।।
ॐ जय..... ।।4।।

वीतराग शासन जयवंत हो

श्री देवशास्त्र गुरु विधान

माण्डला

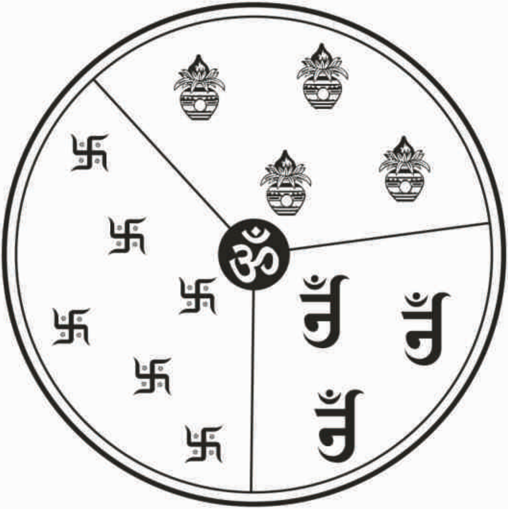

रचयिता :

प. पू. आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज

श्री देवशास्त्र गुरु पूजन विधान (लघु)

स्थापना

छियालिस मूल गुणों के धारी, होते हैं अर्हत् जिनराज।
भवि जीवों के लिए रहे जो, पावन तारण तरण जहाज।।
श्री जिनेन्द्र की वाणी पावन, जैनागम है महति महान।
रत्नत्रय के धारी गुरु का, भाव सहित करते आह्वान।।

दोहा – श्रद्धा कर जिनके प्रति, जागे सम्यक् दर्श।
देव शास्त्र गुरु पद नमन, करके हो मन हर्ष।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

तर्ज – कौन कहता है भगवान...

नीर गंगा का भर के, कलश लाए हैं।
प्रभू अर्चा के हेतू शरण आए हैं।।
जैन अर्चा करें, श्री जिन देव की।
शास्त्र की शुभ करें, श्री गुरुदेव की।। 1।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं नि.स्वाहा।

गंध केशर से पावन, बना लाए हैं।
भवातप नाश करने, शरण आए हैं।।

जैन अर्चा करें, श्री जिन देव की।
शास्त्र की शुभ करें, श्री गुरुदेव की।।2।।
ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।
धवल अक्षत चढ़ाने, यहाँ लाए हैं।
सुपद अक्षत को पाने, शरण आए हैं।।
जैन अर्चा करें, श्री जिन देव की।
शास्त्र की शुभ करें, श्री गुरुदेव की।।3।।
ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।
थाल भर के सुमन के, विशद लाए हैं।
काम रुज नाश करने, यहाँ आए हैं।।
जैन अर्चा करें, श्री जिन देव की।
शास्त्र की शुभ करें, श्री गुरुदेव की।।4।।
ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।
सरस नैवेद्य घृत के, बना लाए हैं।
रोग क्षुत् नाश हो, हम शरण आए हैं।।
जैन अर्चा करें, श्री जिन देव की।
शास्त्र की शुभ करें, श्री गुरुदेव की।।5।।
ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।
दीप घृत के जलाकर, यहाँ लाए हैं।
मोहतम नाश करने, शरण आए हैं।।

जैन अर्चा करें, श्री जिन देव की।
शास्त्र की शुभ करें, श्री गुरुदेव की।।6।।
ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व.स्वाहा।
धूप हम यह दशांगी, यहाँ लाए हैं।
कर्म आठों जलाने, शरण आए हैं।।
जैन अर्चा करें, श्री जिन देव की।
शास्त्र की शुभ करें, श्री गुरुदेव की।।7।।
ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
फल चढ़ाने सरस हम, यहाँ लाए हैं।
मोक्ष फल प्राप्त करने, शरण आए हैं।।
जैन अर्चा करें, श्री जिन देव की।
शास्त्र की शुभ करें, श्री गुरुदेव की।।8।।
ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निव. स्वाहा।
द्रव्य आठों का हम अर्घ्य, यह लाए हैं।
सुपद शास्वत मिले हम, शरण आए हैं।।
जैन अर्चा करें, श्री जिन देव की।
शास्त्र की शुभ करें, श्री गुरुदेव की।।9।।
ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निव. स्वाहा।
दोहा - शांतीधारा जो करें, पाएँ शांति अपार।
शांती का दरिया बहे, श्री जिनेन्द्र के द्वार।।
शान्तये शांतिधारा

दोहा – देव शास्त्र गुरु पूजते, भाव सहित जो लोग।
ऋद्धि सिद्धि सौभाग्य पा, पावें शिव का भोग।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

सोरठा– गाते हैं जयमाल, आप्तागम गुरु की यहाँ।
वन्दन करें त्रिकाल, गुण गाते जिनके विशद।।

(ज्ञानोदय छन्द)

भव वन का पारावार नहीं, उसमें अनादि से भटकाए।
मृग सम मृगतृष्णा के पीछे, हम भूल स्वयं को पछताए।।
हे प्रभुवर ! तव चरणों आए, तव ज्ञान रौशनी मिल जाए।
मुरझाई ज्ञान लता मेरी, हे नाथ ! शीघ्र ही खिल जाए।। 1।।
यह भ्रान्ति रही मिथ्या मेरी, हम भोगों से सुख पाऐंगे।
किन्तू ना मिले सुख क्षण भर को, हम स्वयं भोग हो जाऐंगे।।
भोगों को जितना भोगा है, उतनी ही बड़ी इच्छा ज्वाला।
तृष्णा की खाई और बड़ी, मानो पावक में घी डाला।। 2।।
हे नाथ ! आपकी पूजा कर, हो जाय शांत मेरी आशा।
मैं सच्चे सुख को पा जाऊँ, मिट जाए मन की अभिलाषा।।
संसार में रहकर हे स्वामी !, ना आप रहे हैं संसारी।
अतएव झुकी है तव चरणों, इस जगती की माया सारी।। 3।।
है द्वादशांग वाणी जिससे, शुभ नय के निर्झर झरते हैं।
शुभ स्याद्वाद की सरिता में, भविजन खग कलरव करते हैं।।

ॐकार मयी जिनवाणी है, जिसमें ब्रह्माण्ड समाया है।
उस अनुपम पावन गंगा में, अवगाहन हमने पाया है।। 4।।
हे मोक्ष मार्ग के दिग्दर्शक!, तव नग्न स्वरूप निराला है।
संसार असार विनश्वर तज, शिवमार्ग दिखाने वाला है।।
जग के प्राणी निज सुधि खोकर, जब विषय भोग में लीन रहें।
निर्ग्रंथ दिगम्बर मुनिवर तव, निज आत्म ध्यान तल्लीन रहें।।5।।
विप्लव करते हों गज मृग सिंह, हो भीम गर्जना कोलाहल।
तपती हो धूप या शीत लहर, वर्षा बिजली की हो हलचल।।
गुरु शीलवान जो महाव्रती, स्वातम में सदा विचरते हैं।
ज्ञानी ध्यानी समरस धारी, आतम का मंथन करते हैं।। 6।।
हित मित प्रिय शुभ जिनकी वाणी, हरने वाली अन्तर्ज्वाला।
क्षण में ही पूर्ण विलय होवे, फैला जो मोह तिमिर काला।।
दानी क्या तुमसा कोई है, जग को सारा जग दे डाला।
निर्ग्रन्थ रूप धारा शास्वत, जो है शिव पद देने वाला।। 7।।
चलते फिरते अरहंतों सम गुरु, चरणों शीश झुकाते हैं।
हम चलें आपके शिवपथ पर, नित विशद भावना भाते हैं।।
है नमस्कार अरहंतों को, जिनवर वाणी को नमस्कार।
है नमस्कार जिन गुरुओं को, शिवपथ को वन्दन बार-बार।।8।।
हे वीतराग जिनवर! प्रणाम, हे आगम देव! तुम्हें प्रणाम।
हे शिव पद साधक कीर्तिमान!, हे सर्व साधु तव पद प्रणाम!।।
परमेष्ठी वाचक णमोकार, जिनबिम्बों को सादर प्रणाम।
जिनधर्म लोक में पूज्य 'विशद', है सबको बारम्बार प्रणाम।।9।।

दोहा - देव पूज्य अरहंत हैं, आगमशास्त्र प्रमाण।
गुरुवर श्री निर्ग्रन्थ हैं, शिवपद के सोपान।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो रत्नत्रय निधि के स्वामी, प्रभु गुणानन्त के रत्नाकार।
हैं सकल तत्त्व के प्रतिपादक, सम्यक्त्व आदि गुण के सागर।।
जो अनेकांत गुण स्याद्वाद, वाणी शुभनय के प्रतिपादक।
हे वीतराग मय अविकारी, गुरु देव आप शिव के साधक।।

।। इत्याशीर्वाद: (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत)।।

अर्घ्यावलि

दोहा - देव शास्त्र गुरु लोक में, गाये मंगल कार।
पुष्पांजलि करते प्रथम, जिनपद बारम्बार।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत)

दश जन्मातिशय प्राप्त जिन के अर्घ्य

सहस्त्राष्ट लक्षण के धारी, अतिशय रूप सुगन्धी वान।
वज्र वृषभ नाराज संहनन, सम चतुस्त्र संस्थान प्रधान।।
बल अतुल्य प्रिय हित वाणी युत, ना पसेव ना रहे निहार।
श्वेत रुधिर तन का दश अतिशय, जन्म समय के मंगलकार।।
तीर्थंकर प्रभु जी यह पावें, तीर्थंकर प्रकृति को धार।
ऐसे प्रभु के चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार।। 1।।

ॐ ह्रीं दश जन्मातिशय प्राप्त श्री अरिहन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

केवलज्ञानातिशय प्राप्त जिन के अर्घ्य

शत् योजन में हो सुभिक्षता, गगन गमन ना कवलाहार।
अदया रहित चतुर्दिक दर्शन, हो उपसर्गों का परिहार।।
सब विद्या के ईश्वर छाया, रहित बढ़े ना ही नख केश।
नहीं झपकते पलक नेत्र के, दश अतिशय ये कहे विशेष।।
तीर्थंकर प्रभु जी यह पावें, तीर्थंकर प्रकृति को धार।
ऐसे प्रभु के चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार।। 2।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानातिशय प्राप्त श्री अरिहन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

देवकृत चतुर्दश अतिशय

भाषा अर्ध मागधी निर्मल, दिश आकाश मित्रतावान।
खिलें फूल फल सब ऋतुओं के, पृथ्वी होवे काँच समान।।
चरण कमल तल कमल गगन में, गंधोदक की होवे वृष्टि।
मंद सुगन्ध बयार गगन में, जय-जय हो हर्षित सब सृष्टि।।
कंटक रहत भूमि मंगल द्रव्य, धर्म चक्र हो अग्र गमन।
अतिशय देव रचित यह चौदह, करें जीव प्रभु का अर्चन।। 3।।

ॐ ह्रीं देवकृत चतुर्दश अतिशय प्राप्त श्री अरिहन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य

तरु अशोक त्रय क्षत्र शोभते, दिव्य ध्वनि हो मंगलकार।
रत्नमयी सिंहासन दुन्दुभि, भामण्डल सोहे मनहार।।

पुष्पवृष्टि हो देवों द्वारा, चौंसठ चँवर ढुराएँ देव।
प्रातिहार्य यह आठ प्रभू के, समवशरण में होंय सदैव।।
तीर्थंकर प्रभु जी यह पावें, तीर्थंकर प्रकृति को धार।
ऐसे प्रभु के चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार।।4।।

ॐ ह्रीं अष्ट प्रातिहार्य प्राप्त श्री अरिहन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अनन्त चतुष्टय

दर्श अनन्त ज्ञान सुखधारी, बल अनन्त पावें भगवान।
अनन्त चतुष्टय के धारी हों, पाने वाले केवलज्ञान।।
तीर्थंकर प्रभु जी यह पावें, तीर्थंकर प्रकृति को धार।
ऐसे प्रभु के चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार।।5।।

ॐ ह्रीं अनन्त चतुष्टय प्राप्त श्री अरिहन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अष्टादश दोष रहित श्री जिन

जन्म जरा चिंता विस्मय रुज, क्षुधा तृषा निद्रा औ खेद।
राग द्वेष भय मरण मोह मद, शोक अरति अरु जानो स्वेद।।
दोष अठारह रहित जिनेश्वर, जगती पति होते भगवान।
भव्य जीव जिनकी अर्चाकर, पावें पावन पुण्य निधान।।
तीर्थंकर प्रभु जी यह पावें, तीर्थंकर प्रकृति को धार।
ऐसे प्रभु के चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार।।6।।

ॐ ह्रीं अष्टादश दोषरहित श्री अरिहन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शास्त्र–चउ अनुयोग की अर्घ्यावली

प्रथमानुयोग का अर्घ्य

पुण्य पुरुष का कथन है जिनमें, कहलाते वे शास्त्र पुराण।
महापुरुषों के जीवन चारित, का होता जिसमें व्याख्यान।।
बोधि समाधी का निधान है, प्रथमानुयोग शास्त्र पावन।
जिनवाणी का मूल विशद जो, जिसका हम करते अर्चन।।7।।

ॐ ह्रीं प्रथमानुयोग ग्रन्थाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करणानुयोग का अर्घ्य

लोकालोक विभागी पावन, युग परिवर्तन का व्याख्यान।
चारों गति में जीव रहे जो, जिसका वर्णन रहा महान।।
करणानुयोग में अतिशय झलके, द्रव्यतत्त्व आदर्श समान।
परिणामों का व्याख्याकारी, जिसका हम करते गुणगान।।8।।

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भूत करणानुयोग ग्रन्थाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चरणानुयोग का अर्घ्य

मुनि एवं श्रावक की चर्या, का है जिसमें श्रेष्ठ कथन।
चारित की उत्पत्ति वृद्धि शुभ, रक्षा का जिसमें वर्णन।।
चरणानुयोग शास्त्र है पावन, जिसकी महिमा रही महान।
सम्यक् चारित पाने को हम, करते भाव सहित गुणगान।।9।।

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भूत चरणानुयोग ग्रन्थाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्यानुयोग का अर्घ्य

जीवाजीव आदि तत्त्वों का, पुण्य पाप का भी व्याख्यान।
बन्ध मोक्ष का कथन है जिसमें, द्रव्यानुयोग शास्त्र वह मान।।
तन चेतन का दिग्दर्शक जो, पावन है आध्यात्म स्वरूप।
जिसके द्वारा व्रत के धारी, प्रकट करें निज आतम रूप।। 10।।

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भूत द्रव्यानुयोग ग्रन्थाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवरों की अर्घ्यावली

आचार्य परमेष्ठी का अर्घ्य

बारह तप दश धर्म के धारी, पालन करते पंचाचार।
षट् आवश्यक पालन करते, गुप्तीधारी ऋषि अनगार।।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, परमेष्ठी आचार्य महान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हम जिनका गुणगान।। 11।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपाध्याय परमेष्ठी का अर्घ्य

ग्यारह अंग पूर्व चौदह के, धारी पाठक कहे विशेष।
ज्ञान ध्यान में लीन यतीश्वर, देने वाले सद् उपदेश।।
उपाध्याय परमेष्ठी अनुपम, होते पावन ज्ञान प्रवीण।
जिनकी अर्चा करते हैं हम, कर्म होंय मेरे सब क्षीण।। 12।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधू परमेष्ठी का अर्घ्य

विषयाषा के त्यागी साधू, जो आरम्भ परिग्रह हीन।
रत्नत्रय के धारी पावन, रहते ज्ञान ध्यान तप लीन।।
परम दिगम्बर मुद्राधारी, कहलाएँ साधू अनगार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते वन्दन बारम्बार।। 13।।

ॐ ह्रीं श्री निर्ग्रन्थ साधू परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

अरिनाशी अरहंत कहे हैं, अष्ट कर्म नाशी जिन सिद्ध।
जिन की वाणी परमागम है, जिनवाणी है जगत प्रसिद्ध।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु गुरु, मोक्ष मार्ग के राही आप।
जिनकी अर्चा से कट जाते, जन्म जन्म के सारे पाप।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य – ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– तीन लोक के जीव सब, अर्चा करें त्रिकाल।
देव शास्त्र गुरु की विशद, गाते हैं जयमाल।।

तर्ज – चौबीसी पूजन की...

लगाकर ध्यान तन मन से, करो जिनराज का दर्शन।
विशद दुख दूर होंगे सब, कटेंगे कर्म के बन्धन।। टेक।।
परम अरहंत हैं पावन, रहे जो लोक हितकारी–2।

हितैषी हैं जगत जन के, कहे जो भव्य भयहारी-2।।
रमा शिवकंत के गाये, जगत वंदन है मनरंजन।। लगाकर...।। 1।।
निरंजन नित्य अविकारी, सिद्ध जिन सिद्ध पद दाई-2।
कर्म आठों नशाते जो, आठ गुणधर बनें भाई-2।।
अमर ज्ञायक स्वरूपी हैं, परम वन्दन है चितरंजन।। लगाकर...।। 2।।
पंच आचार के पालक, कहे आचार्य श्री ज्ञानी-2।
कहे सन्मार्ग के दाता, जगत जन के है कल्याणी-2।।
मोक्ष के जो कहे राही, जगत वन्दन है सुखकारण।। लगाकर...।। 3।।
कहे जो रत्नत्रय धारी, उपाध्याय ज्ञान के दाता-2।
ध्यान में जो निरत रहते, अंग पूरव के जो ज्ञाता-2।।
महत् महिमा के धारी हैं, चरण में हम करें वन्दन।। लगाकर...।। 4।।
विषय आशा के जो त्यागी, परिग्रह से रहित गाए-2।
रहे जिनधर्म आराधक, ध्यान में लीनता पाए-2।।
'विशद' कीर्तन करो वन्दन, साधु शिव सौख्य में कारण।।
लगाकर...।। 5।।

सोरठा- रहे विनायक आप, पावन श्री जिन धर्म के।
कटते सारे पाप, जिनकी पूजा कर विशद।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - जिनकी पूजा से कटें, जन्म जन्म के पाप।
कट जाते है शीघ्र ही, भव-भव के संताप।।

।। इत्याशीर्वाद: (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत)।।

देव-शास्त्र-गुरु की आरती

(तर्ज - ॐ जय देव.....)

ॐ जय देव शास्त्र गुरुवर, स्वामी देव शास्त्र गुरुवर।
आरती करें तुम्हारी-2, दीपक शुभ लेकर।।
ॐ जय देव शास्त्र।।टेक।।

प्रथम आरती देवश्री जो, अर्हत् कहलाए-स्वामी...।
सिद्ध श्री लोकाग्र निवासी-2, परम शुद्ध गाए।।
ॐ जय..... ।।1।।

जिनवाणी कल्याणी है जो, जग माता गाई-स्वामी...।
पढें सुने ध्याने वाले की-2, बुद्धि बढ़े भाई।।
ॐ जय..... ।।2।।

आचार्योपाध्याय साधु दिगम्बर, गुरुवर कहलाए-स्वामी...।
मोक्ष मार्ग के राही अनुपम, गुरुवर ये गाए।।
ॐ जय..... ।।3।।

देव शास्त्र गुरु की जो प्राणी, आरति यह गाए-स्वामी...।
'विशद' सौख्य पाके इस जग के-2, शिव पथ अपनाए।।
ॐ जय..... ।।4।।

वीतराग शासन जयवंत हो

श्री आदिनाथ विधान

माण्डला

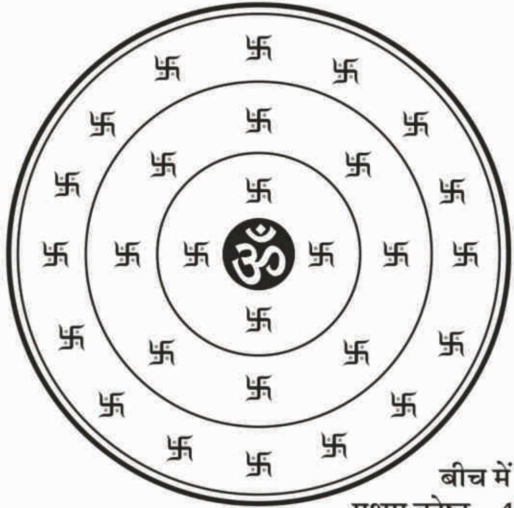

बीच में – ॐ

प्रथम कोष्ठ – 4 अर्घ्य

द्वितीय कोष्ठ – 8 अर्घ्य

तृतीय कोष्ठ – 16 अर्घ्य

कुल – 28 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज

श्री आदिनाथ स्तवन

स्तवन (अनुष्टुप-छन्द)

वृषभं वृष चक्रांकम्, वृष-तीर्थ-प्रवर्तकम्।
वृषाय विशदं वंदे, वृषभं वृषभात्मानाम्।।1।।

(दोधक-छंद)

आदि जिनं वंदे गुणसदनं, सदनन्तामल-बोधं जी।
बोधकता-गुण विस्तृत कीर्तिं, कीर्तित पथ-मविरोधं जी।।
आदि जिनं...।।2।।
रोधरहित-विस्फुर-दुपयोगं, योगं दधत-मभंगं जी !
भंगं नय-वज्र-पेशलवाचं, वाचं यम-सुख-संगं जी।। आदि...।।3।।
संगत पद-शुचि वचन तरंगं, रंगं जगति ददानं जी।
दान-सुरद्रुम-मंजुल हृदयं, हृदयंगम-गुण-भानं जी।। आदि...।।4।।
आनन्दित-सुर-नर-पुन्नागं, नागर-मानस-हंसं जी।
हंस गतिं पंचम-गतिवासं, वासव-विहिता-शंसं जी।। आदि...।।5।।
शंसन्तं नयवचन-मनवमं, नव-मंगल-दातारं जी।
तार-स्वर-मघ घनपवमानं, मान सुभट-जेतारं जी।। आदि...।।6।।

(बसन्त तिलका छंद)

इत्थं स्तुतः प्रथम तीर्थ पतिः प्रमोदात्,
श्री मद - यशो सकल ज्ञायक पुंगवेन्।
श्री पुंडरीक - गिरिराज - विराजमानो,
मानोन्मुखानि वितनोतु सतां सुखानि।।7।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत ।।

श्री आदिनाथ पूजा विधान

स्थापना

आदिनाथ भगवान हैं, शिव पद के दातार।
आह्वानन् करते हृदय, पाने मुक्ती द्वार।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौपाई छन्द)

प्रासुक यह नीर चढ़ाएँ, जल धारा कर हर्षाएँ।
हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन गोशीर घिसाएँ, भवताप से मुक्ती पाएँ।
हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत जिन चरण चढ़ाएँ, अक्षय पदवी हम पाएँ।
हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित यह पुष्प चढ़ाएँ, हम कामरोग विनशाएँ।
हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चरु ताजे यहाँ चढ़ाएँ, अब क्षुधा से मुक्ती पाएँ।
हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा को दीप जलाएँ, अब आठों कर्म नशाएँ।
हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ताजे यहाँ चढ़ाएँ, हम मोक्ष महाफल पाएँ।
हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा कर अर्घ्य चढाएँ, अब पद अनर्घ्य पा जाएँ।
हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा – देते शांतीधार, भाव सहित हम भी यहाँ।
पाएँ भवदधि पार, यही भावना भा रहे।।

शान्तये शांतिधारा

सोरठा – पाने शिव सोपान, पुष्पांजलि करते चरण।
करते हम गुणगान, अतः भाव से हम यहाँ।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

पंचकल्याणक के अर्घ्य

आषाढ़ सु द्वितीया गाई, प्रभु गर्भ में आए भाई।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्ण द्वितीयां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि चैत नमें को स्वामी, जन्मे प्रभु अन्तर्यामी।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण नवम्यां जन्म कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौमी वदि चैत को भाई, जिनवर ने दीक्षा पाई।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण नवम्यां दीक्षा कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकादशि फाल्गुन पाए, प्रभु केवल ज्ञान जगाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन वदि एकादश्यां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि माघ सु चौदश आए, अष्टापद से शिव पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं माघ कृष्ण चर्तुदश्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – ऋषभ देव से देव का, कैसे हो गुणगान।
जयमाला गाते यहाँ, करने को जयगान।।

(पद्धरि छन्द)

जय भोग भूमि का अन्त पाय, जय ऋषभदेव अवतार आय।
जय पिता आपके नाभिराय, जय माता मरुदेवी कहाय।।1।।
जय अवधपुरी नगरी प्रधान, घर-घर में छाया सुयश गान।
सौधर्म इन्द्र तब हर्ष पाय, तव न्हवन मेरु पे जा कराय।।2।।
प्रभु के पद में करके प्रणाम, तव ऋषभनाथ शुभ दिया नाम।
शुभ धनुष पाँच सौ उच्च देह, जन-जन से जिनको रहा नेह।।3।।
लख पूर्व चौरासी उम्र जान, षट्कर्म की शिक्षा दिए मान।
नीलांजना की मृत्यु का योग, पाके छोड़े संसार भोग।।4।।
तब नग्न दिगम्बर भेष धार, निज में निज ध्याये निराकार।
प्रगटाए प्रभु कैवल्य ज्ञान, प्रभु दिव्य देशना दिए जान।।5।।
फिर 'विशद' कर्म का कर विनाश, शिवपुर में जाके किए वास।
अष्टापद पाया मोक्ष थान, जो सिद्धक्षेत्र गाया महान।।6।।
महिमा का जिनकी नहीं पार, संयम धर पाए मोक्ष द्वार।
जो पूज्य हुए जग में महान, देते हैं जग को अभयदान।।7।।

दोहा – गुण गाते हैं भाव से, चरण झुकाते शीश।
अर्चा करते हम 'विशद', पाने को आशीष।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - गुण पाने गुणगान हम, करते मंगलकार।
शिवपद के राही बनें, पाएँ भवदधि पार।।

(इत्याशीर्वादः)

प्रथम वलयः

दोहा - आराधन आराध कर, किए कर्म का अंत।
वृषभदेव वृष प्राप्त कर, हुए विशद अरहंत।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

(चार आराधना के अर्घ्य)

(रेखता छन्द)

प्रभु जी पाए सम्यक् दर्श, जगाए मन में अतिशय हर्ष।
हुए प्रभु जी आराधन वान, प्राप्त फिर किए सुपद निर्वाण।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन आराधना युत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राप्त करके प्रभु सम्यक् ज्ञान, जगाए अतिशय केवलज्ञान।
हुए प्रभु जी आराधन वान, प्राप्त फिर किए सुपद निर्वाण।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यक् ज्ञान आराधना युत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

प्रभु जी होके चारित वान, किए जो निज आतम का ध्यान।
हुए प्रभु जी आराधन वान, प्राप्त फिर किए सुपद निर्वाण।।3।।

ॐ ह्रीं सम्यक् चारित आराधना युत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जी हो द्वादश तपवान, निर्जरा अनुपम किए प्रधान।
हुए प्रभु जी आराधन वान, प्राप्त फिर किए सुपद निर्वाण।।4।।

ॐ ह्रीं सम्यक् तप आराधना युत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – सम्यक् दर्शन ज्ञान शुभ, चारित सुतप महान।
चउ आराधन कर मिले, शिव पद का सोपान।।5।।

ॐ ह्रीं चउ आराधना युत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा – गुण अतिशय पाएँ प्रभू, दोष रहित भगवान।
भव्य जीव करते अतः, भाव सहित गुणगान।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

जिन गुणावली

(चौपाई)

जन्म के दश अतिशय प्रभु पाएँ, अतिशय पावन ये प्रगटाएँ।
अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।1।।

ॐ ह्रीं दश जन्मातिशय प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ज्ञान के अतिशय दश प्रगटाएँ, पावन केवलज्ञान जगाएँ।
अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।2।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञान दशातिशय प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह देवों कृत कहलाएँ, अतिशय प्रभु जी ये भी पाएँ।
अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।3।।
ॐ ह्रीं चतुर्दश देवातिशय प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
होते प्रातिहार्य के धारी, तीन लोक में मंगलकारी।
अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।4।।
ॐ ह्रीं अष्ट प्रातिहार्य युत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
अनन्त चतुष्टय प्रभु जी पाएँ, कर्म घातियाँ आप नशाएँ।
अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।5।।
ॐ ह्रीं अनन्त चतुष्टय युत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
दोष अठारह रहित कहाए, प्रभु अतिशय महिमा दिखलाए।
अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।6।।
ॐ ह्रीं अष्टादश दोष रहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
कहे प्रभू दश धर्म के धारी, जिनकी महिमा अतिशय कारी।
अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।7।।
ॐ ह्रीं दशधर्म धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
द्वादश अनुप्रेक्षा जो ध्याएँ, अतिशय प्रभु वैराग्य जगाएँ।
अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।8।।
ॐ ह्रीं द्वादश अनुप्रेक्षा भावना युत श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।
प्रभु जी हैं अनुपम गुणधारी, जिनकी महिमा विस्मयकारी।
अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।9।।
ॐ ह्रीं अनुपम गुणधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तृतिय वलयः

दोहा – गुण विशिष्ट पाएँ प्रभू, महिमामयी महान।
जिससे हो इस लोक में, जग जन का कल्याण।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

विशिष्ट गुणावली

(चाल छन्द)

प्रभु दोष रहित कहलाए, सर्वज्ञ आप्तता पाए।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं सर्व अपराध नाशन समर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

है द्वेष रहित अविकारी, है जग से महिमा न्यारी।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं समस्त उपद्रव नाशन समर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु वीतरागता धारी, निज आतम ब्रह्म विहारी।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं समस्त अनर्थकारक रागभूत विनाशन समर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मति ज्ञानाज्ञान निवारी, कैवल्य ज्ञान के धारी।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं समस्त दीनता हीनता नाशन समर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत ज्ञानाज्ञान के त्यागी, कहलाए आप विरागी।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं समस्त अज्ञान नाशन समर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वय अवधि ज्ञान विनिवारी, जगती पति जिन शिवकारी।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं समस्त दुर्घटना नाशन समर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन पर्यय ज्ञान भी छोड़े, निज से निज नाता जोड़े।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं समस्त मनोरोग-विकार-विभ्रम नाशन समर्थ श्री आदिनाथ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो हैं तत्वों के ज्ञाता, इस जग के भाग्य विधाता।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं सप्त तत्व परमोपदेशक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो पुण्य पाप परिहारी, जग-जन के रक्षाकारी।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं समस्त पराभव नाशन समर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं जीव कई संसारी, इक दूजे के उपकारी।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।10।।

ॐ ह्रीं पंचपरावर्तन संसार भ्रमण नाशन समर्थ आराध्य स्वरूप
श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मुक्त जीव हो जाते, वे सिद्ध बुद्ध कहलाते।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।11।।
ॐ ह्रीं आत्म सिद्धि निरोधक कारण विनाशन समर्थ आराध्य स्वरूप श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रस थावर जीव कहाए, जग में सब भ्रमते पाए।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।12।।
ॐ ह्रीं संयोग वियोग दुख विनाशन समर्थ आराध्य स्वरूप श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भव्य जीव कहलाएँ, वे रत्नत्रय निधि पाएँ।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।13।।
ॐ ह्रीं रत्नत्रय आराध्य स्वरूप श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

होते अभव्य जो प्राणी, बहिरातम हों अज्ञानी।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।14।।
ॐ ह्रीं निधत्ति निकाचित कर्म विनाशन समर्थ आराध्य स्वरूप श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तर आतम हों ज्ञानी, जो वीतराग विज्ञानी।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।15।।
ॐ ह्रीं कुश्रुत श्रद्धा विनाशन समर्थ आराध्य स्वरूप श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन सकल निकल द्वय गाए, परमातम विशद कहाए।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।16।।
ॐ ह्रीं कपोल कल्पित सिद्धान्त श्रद्धा विनाशन समर्थ आराध्य स्वरूप श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह गुण विशेष जिन पावें, अरहंत अतः कहलावें।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।17।।

ॐ ह्रीं विशिष्ट गुण धारक कष्ट निवारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः मम सर्व कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा - धनुष पाँच सौ उच्चतम, तन है स्वर्ण समान।
लख चौरासी पूर्व वय, ऋषभनाथ भगवान।।

(शम्भू छन्द)

पंचकल्याणक पाने वाले, तीर्थंकर हैं जगत प्रसिद्ध।
कर्म नाशकर अपने सारे, हो जाते हैं वे जिन सिद्ध।।
गर्भ कल्याणक में आने के, छह महीने पहले शुभकार।
देव रत्न वृष्टी करते हैं, जन्म नगर में मंगलकार।।1।।
अष्ट देवियाँ गर्भ का शोधन, करती आके भाव विभोर।
उत्सव होता है नगरी में, मंगलमय होता चारों ओर।।
सोलह स्वप्न देखती माता, जिनकी महिमा अपरम्पार।
जन्म समय में इन्द्र चरण में, बोला करते जय जयकार।।2।।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराने, ऐरावत ले आता इन्द्र।
एक हजार आठ कलशों से, न्हवन करायें सौ सौ इन्द्र।।

पद युवराज प्राप्त करके जिन, पाते हैं नर भव के भोग।
हो विरक्त दीक्षा पाते हैं, पा करके अनिष्ट संयोग।।3।।
केश लुंच कर महाव्रती हो, करते हैं निज आतम ध्यान।
कर्म निर्जरा करते ज्ञानी, असंख्यात गुणी जिन भगवान।।
कर्म घातियाँ के नाशी जिन, प्रगटाते हैं केवलज्ञान।
समवशरण की रचना करते, स्वर्ग से आके इन्द्र महान।।
दिव्य देशना खिरती प्रभु की, भव्य जीव करते रसपान।
कोई दर्शन ज्ञान जगाकर, चारित पा करते कल्याण।।
अन्त समय में कर्म नाशकर, करते हैं प्रभु मोक्ष प्रयाण।
मोक्ष मार्ग दर्शायक जग में, आदिनाथ जी हुए महान।।5।।

दोहा - राही बनते मोक्ष के, तीर्थंकर भगवान।
जिनसे दर्शन ज्ञान पा, करते निज कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा -श्रद्धा से सम्यक्त्व हो, होवे सम्यक् ज्ञान।
सम्यक् चारित हो विशद, जो है शिव सोपान।।

इत्याशीर्वादः

श्री आदिनाथाष्टक

(मालनी छन्द)

जयति शिवपुर स्त्री स्मेर नेत्रावपात-
स्तवकित व पुरुच्चै नाभि सुनूर्जिनेन्द्रः।
सरस-विकसिताम्भो जात पूजोपचारः,
कृत सरसिजमाला-मन्तरेणापि यस्य।।1।।

जयति जगति देवः शुद्ध भावास्तमारः,
त्रिभुवन-जन-पूज्यः पूर्णबोधैक राज्यः।
नत-दिविज-समाजः प्रास्त-जन्मद्रुबीजः,
समवसृति निवासः केवल श्री निवासः।।2।।
त्वपि सति परमात्मन्-मादृशान्-मोह-मुग्धान्,
कथमतनु वशत्वान्बुद्ध केशान्यजेऽहम्।
सुगत-मगधरं वा वागधीशं शिवं वा,
जितभव-मभिवन्दे भासुरं श्री जिनं वा।।3।।
यदमल पदपद्मं श्री जिनेशस्य नित्यं,
शतमख शत सेव्यं पद्म गर्भादि वन्द्यम्।
दुरित वन कुठारं ध्वस्त मोहांधकार,
सदखिल सुख हेतुं त्रिप्रकारै-र्नमामि।।4।।
जनन-वन-हुताशं छिन्न संमोह पाशं,
शमित-मदन-मानं विश्व-विद्या, निदानम्।
चरुभिरुरु गुणौधं प्रीणितं प्राणि संघं,
जिनऋषभ-महान्तं नौमि कर्मौघ शान्त्यैः।।5।।
जयति जन सुवन्द्यश्चिच्चमत्कार युक्तः,
रामसुख भरकन्दोऽपास्त कर्मारि वृन्दः।
निखिल मुनि गरिष्ठः कीर्ति सत्तावरिष्ठः,
सकल-सुरप-पूज्यः श्री जिनो आदिनाथः।।6।।
स्तिमित तम-समाधि ध्वस्त निःशेष दोषं,
क्रम गत करणान्तर्द्धान हीनावबोधम्।

विमल-ममल-मूर्ति कीर्ति भाजं द्युभाजां,
नमत जिन-मवाप्त्यै-र्भक्ति भारेण भव्याः।।7।।
निहित सकलघाती निश्चलाग्रावबोधो,
गदित परमधर्मो आदिनामा जिनेन्द्रः।
'विशद' तनु विनाशान्निर्मलः शर्मसारो,
दिशतु सुखमनन्तं शान्त सर्वात्मको नः।।8।।

बसन्त तिलका छन्द

धर्मो दया कथमसौ सपरिग्रहस्य,
वृष्टिर्-धरातल हिता कि-मवग्रहेडिस्त।
तस्मात्त्वया द्वय परिग्रह मुक्तिरुक्ता,
तद् वासना सुमहितो जिन आदिनाथः।।19।।

श्री आदिनाथ चालीसा

दोहा - परमेष्ठी जिन पाँच हैं, मंगल उत्तम चार।
शरण चार की प्राप्ति कर, भवदधि पाऊँ पार।।
आज यहाँ हम भाव से, करते है गुणगान।
चालीसा जिन आदि का, गाते विशद महान।।

चौपाई

लोकालोक अनन्त बताया, जिसका अन्त कहीं न पाया।।1।।
लोक रहा है विस्मयकारी, चौदह राजू है मनहारी।।2।।
ऊर्ध्व लोक ऊर्ध्व में गाया, अधोलोक नीचे बतलाया।।3।।
मध्य लोक है मध्य में भाई, सागर दीप युक्त सुखदायी।।4।।

नगर अयोध्या जन्म लिया है, नाभिराय को धन्य किया है।।5।।
सर्वार्थ-सिद्धि से चय कर आये, मरुदेवी के लाल कहाए।।6।।
चिन्ह बैल का पद में पाया, लोगों ने जयकार लगाया।।7।।
आदिनाथ प्रभु जी कहलाए, प्राणी सादर शीश झुकाए।।8।।
जीवों को षट् कर्म सिखाए, सारे जग के कष्ट मिटाए।।9।।
पद युवराज का पाये भाई, विधि स्वयंवर की बतलाई।।10।।
सुत ने चक्रवर्ति पद पाया, कामदेव सा पुत्र कहाया।।11।।
हुई पुत्रियाँ उनके भाई, कालदोष की यह प्रभुताई।।12।।
ब्राह्मी को श्रुत लिपि सिखाई, ब्राह्मी लिपि अतः कहलाई।।13।।
लघु सुता सुन्दरी कहलाई, अंक ज्ञान की कला सिखाई।।14।।
लाख तिरासी पूरब जानो, काल भोग में बीता मानो।।15।।
इन्द्र के मन में चिंता जागी, प्रभु बने बैठे हैं रागी।।16।।
उसने युक्ति एक लगाई, देवी नृत्य हेतु बुलवाई।।17।।
उससे अतिशय नृत्य कराया, तभी मरण देवी ने पाया।।18।।
दृश्य प्रभु के मन में आया, प्रभु को तब वैराग्य समाया।।19।।
केश लुंच कर दीक्षा धारी, संयम धार हुए अविकारी।।20।।
छह महीने का ध्यान लगाया, चित् का चिंतन प्रभु ने पाया।।21।।
चर्या को प्रभु निकले भाई, विधि किसी ने जान न पाई।।22।।
छह महीने तक प्रभु भटकाए, निराहार प्रभु काल बिताए।।23।।
नृप श्रेयांश को सपना आया, आहार विधि का ज्ञान जगाया।।24।।
अक्षय तृतीया के दिन भाई, चर्या की विधि प्रभु ने पाई।।25।।
भूप ने यह सौभाग्य जगाया, इक्षु रस आहार कराया।।26।।

पंचाश्चर्य हुए तब भाई, ये है प्रभुवर की प्रभुताई।।27।।
प्रभुजी केवलज्ञान जगाए, समवशरण तब देव बनाए।।28।।
प्रातिहार्य अतिशय प्रगटाए, दिव्य ध्वनि तब प्रभु सुनाए।।29।।
बारह योजन का शुभ गाए, गणधर चौरासी प्रभु पाए।।30।।
माघ वदी चौदश कहलाए, अष्टापद से मोक्ष सिधाए।।31।।
मोक्ष मार्ग प्रभु ने दर्शाया, जैनधर्म का ज्ञान कराया।।32।।
योग निरोध प्रभुजी कीन्हें, कर्म नाश सारे कर दीन्हें।।33।।
शिव पदवी को प्रभु ने पाया, सिद्ध शिला स्थान बनाया।।34।।
बने पूर्णतः प्रभु अविकारी, सुख अनन्त पाये त्रिपुरारी।।35।।
हम भी यही भावना भाते, पद में सादर शीश झुकाते।।36।।
जगह-जगह प्रतिमाएँ सोहें, भवि जीवों के मन को मोहें।।37।।
क्षेत्र बने कई अतिशयकारी, सारे जग में मंगलकारी।।38।।
जिस पदवी को तुमने पाया, वह पाने का भाव बनाया।।39।।
तव पूजा का फल हम पाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।40।।

दोहा - चालीसा चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
'विशद' भाव से जो पढ़ें, पावें भव से पार।।
रोग शोक पीड़ा मिटे, होवे बहु गुणवान्।
कर्म नाश कर अन्त में, होवे सिद्ध महान।।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः मम सर्व कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

श्री आदिनाथ जी की आरती

आज करें हम आदि प्रभु की, आरती मंगलकारी-2।
रोग-शोक-संताप निवारक-2, पावन मंगलकारी।।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती।टेक।।
भक्तों को हे प्रभू आपने, अतिशय कई दिखाए-2।
दीन-दुखी जो दर पे आए-2, उनके कष्ट मिटाए।।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती।।1।।
दूर दूर से आशा लेकर, भक्त यहाँ पर आते-2।
भक्त आपकी आरती करके-2, मन वांछित फल पाते।।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती।।2।।
कृपा आपकी पाने को हम, दर पे चल के आए-2।
अर्चा करने 'विशद' भाव से-2, दीप जलाकर लाए।।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती।।3।।
हमने सुना है सद्भक्तों के, तुम हो कष्ट निवारी-2।
हम भी द्वार आपके आए-2, आज हमारी बारी।।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती।।4।।
दीनानाथ अनाथों के हो, सब पर कृपा दिखाते-2।
अतः भक्त तव चरणों आके-2, सादर शीश झुकाते।।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती।।5।।